जयपुर जिले की कोटपूतली तहसील के कीरतपुरा गांव के नवाचारी किसान **कैलाश चौधरी** जैविक खेती और आंवला प्रसंस्करण के क्षेत्र में सारे देश में विशिष्ट पहचान बना चुके हैं। 2002 से सम्पर्क में हैं। कीरतपुरा में जैविक खेती और खेत पर आंवला प्रसंस्करण को मीडिया पर भरपूर कवरेज मिली। उनके खेत पर 'कृषक संवाद' आयोजित हुए। जयपुर दूरदर्शन के 'चौपाल' कार्यक्रम के मोंटाज में करीब तीन वर्ष तक वे नियमित रूप से दिखते रहे। 'सिटा' ने 2010 में दिल्ली में किसान–वैज्ञानिकों को पहली बार सम्मानित किया तो उन्हें 'खेतों के वैज्ञानिक' सम्मान से नवाजा। 2016 में दिल्ली में जैविक खेती के विश्व महाकुंभ में 'धरती मित्र पुरस्कार' प्रदान किया गया। राजस्थान के तीन विश्वविद्यालयों ने 2017 व 2018 और जयपुर में राष्ट्रीय सम्मेलन में आपको 'खेतों के वैज्ञानिक' सम्मान से नवाजा। अपने सफरनामे के लिए उन्होंने जतिन कुमार का लेख देते हुए, उसमें बातों का विस्तार किया।

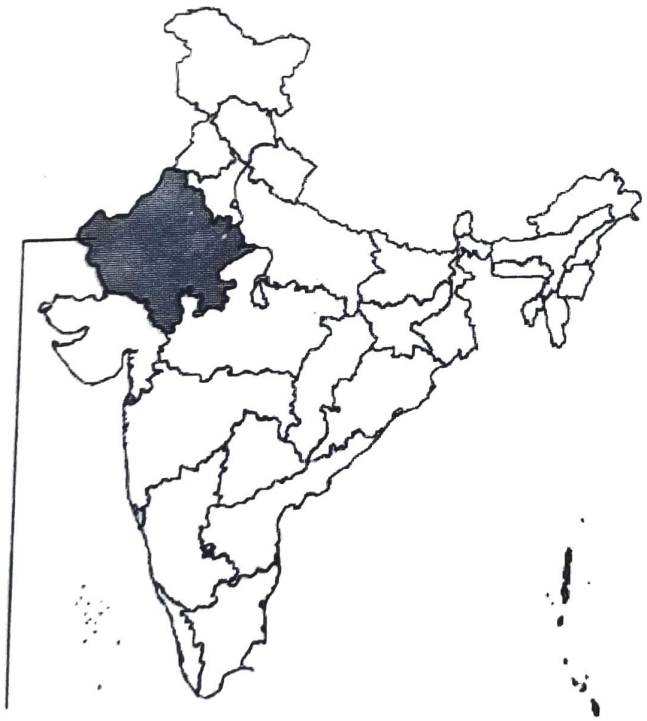

राजस्थान के नवाचारी किसान–वैज्ञानिक

कैलाश चौधरी

कैलाश चौधरी

खेती में ऐसा रमा कि दूसरे काम के बारे में सोचना ही बंद कर दिया। हमेशा यह सोचता रहता कि खेती को और अधिक मुनाफेदार कैसे बनाया जाए। जब भी लोगों के बीच बैठते यही चर्चा करते कि कहां और किस तरह की खेती की जा रही है। परंपरागत खेती के अलावा व्यावसायिक रूप से कौनसी खेती की जा सकती है।

अब किसानों के लिए ही नहीं बल्कि रोजी–रोटी की तलाश में इधर–उधर भटकने वाले युवाओं के लिए भी मार्गदर्शक बन गया हूं। साबित कर दिया कि कुछ कर गुजरने की तमन्ना हो तो कामयाबी खुद–ब–खुद मिलती चली जाती है। कामयाबी के लिए, किसी तरह के शॉर्टकट तरीके अपनाने की जरूरत नहीं होती है। बस जरूरत है तो कड़ी मेहनत और लगन की। जो लोग पूरी तत्परता से खेती में जुट जाते हैं उन्हें अपनी जरूरतों के लिए

किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं पड़ती है। लगन एवं मेहनत ने रंग दिखाया। खुद को स्वावलंबी बना ही दिया, साथ ही सैकड़ों लोगों को अब प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार भी मुहैया करा रहा हूं। हमेशा कोशिश होती है कि उम्दा किस्म का उत्पाद तैयार किया जाए। उत्पाद की गुणवत्ता में किसी तरह का समझौता नहीं करता। इसके लिए समय–समय पर विभिन्न केंद्रों की ओर से चलाए जाने वाले प्रशिक्षण शिविरों में हिस्सा लिया। उन इलाकों का दौरा किया जहां खेती को वैज्ञानिक तरीके से करने की कोशिश की जा रही थी। खेती की बारीकियां सीखी और अधिक उपज प्राप्त करने के गुर भी सीखे। प्रशिक्षण शिविरों में वैज्ञानिकों की ओर से बताई गई बातों को गंभीरता से लिया। कृषि वैज्ञानिकों ने जो सीख दी उसे आत्मसात करते हुए नए–नए प्रयोग किए। ये प्रयोग रंग लाए।

कुछ अपनी

मेरा जन्म कीरतपुरा में 1 जुलाई, 1950 को हुआ। उस समय पिताजी देवकरण चौधरी के पास खेती के लिए करीब चालीस बीघा जमीन थी। पंचायत

मुख्यालय कांसली से 1969 में दसवीं पास कर, अगले ही साल खेती से जुड़ गया। पर्याप्त जमीन थी, लेकिन खेती सिर्फ बीघे में होती थी क्योंकि आवश्यक संसाधन नहीं थे। ज़िंदगी काफी उतार-चढ़ाव भरी रही। 1970 में अलग से कुआं खुदवाया। 1971 में रेहट लगाई। 1974 में डीजल इंजन आया। 1977 में ट्रैक्टर खरीदा। 1978 में तीन ट्यूबवैल लगवाए। 1980 में गांव की चकबंदी के साथ विद्युतीकरण हो गया। संसाधन उपलब्ध होने से उत्पादन दस गुना हो गया। 1978 में 1300 मन उत्पादन में 800 मन गेहूं, 300 मन चना और 200 मन सरसों हुआ।

1990-91 में जैविक खेती के लिए कम्पोस्टिंग की ओर कदम बढ़ाया। साथ में रासायनिक खाद का भी सीमित उपयोग करता। 1994-95 में कृषि विज्ञान केंद्र से कल्चर आदि डालने की विधि सीखी। थोड़ी-सी सक्रियता और मेहनत के दम पर खेती से अधिक लाभ हो सकता है।

खेती के अलावा दूसरे काम के बारे में सोचना बंद

खेती में ऐसा रमा कि दूसरे काम के बारे में सोचना ही बंद कर दिया। हमेशा यह सोचता रहता कि खेती को और अधिक मुनाफेदार कैसे बनाया जाए। जब भी लोगों के बीच बैठते यही चर्चा करते कि कहां और किस तरह की खेती की जा रही है। परंपरागत खेती के अलावा व्यावसायिक रूप से कौनसी खेती की जा सकती है। इसका असर यह हुआ कि सामाजिक सक्रियता बढ़ गई। गांव वालों का भरपूर प्यार मिलने लगा। लोग आपस में मिल-बैठकर यह तय करते कि इस बार किस खेत में क्या बोया जाए। सामाजिक कार्यों में बड़ी रुचि होने की वजह से 1977 में गांव वालों ने निर्विरोध वार्ड पंच चुन लिया। वर्ष 1978 में ग्राम कीरतपुरा के सभी किसानों की भूमि की पैमाइश कराई। गांव की चकबंदी हुई तो किसानों की जमीन एकमुश्त हो गई।

वार्ड पंच रहते हुए हमेशा यही कोशिश की कि सरकार की ओर से जो भी योजना चलाई जाए उसका फायदा उनके वार्ड के लोगों को जरूर मिले। इस जागरूकता का असर भी दिखा। सरकार की ओर से चलाई जा रही तमाम योजनाएं किसी न किसी रूप में वार्ड में जरूर पहुंची। सबसे बड़ी उपलब्धि यह हुई कि 1980 में एक साथ गांव में 25 कृषि कनेक्शन कराए गए। इतनी बड़ी

संख्या में कृषि कनेक्शन होने के बाद तो इलाके की तस्वीर ही बदल गई, क्योंकि जब पानी की पर्याप्त व्यवस्था हो गई तो खेतों का लहलहाना स्वाभाविक था। अब इस इलाके में हर तरह की खेती होने लगी। किसानों को लगातार जागरूक करने और किसानों को विभिन्न योजनाओं का लाभ दिलाने के कारण 1981 में एक बार फिर से वार्ड पंच चुन लिया गया। अब पूरे गांव के किसान एक तरह से सहयोगी बन गए थे। हम सभी लोग मिलकर खेतीबाड़ी करते और खेती में आड़े आने वाली समस्याओं का निस्तारण भी करते। किसानों की आपसी एकजुटता का ही कमाल रहा कि हमारे गांव के लोगों के बीच किसी तरह का विवाद नहीं होता था। 2005 तक थाने में एक भी मुकदमा दर्ज नहीं हुआ। अगर किसी के बीच मतभेद होता तो हम सभी लोग मिलकर आपस में निबटा लेते थे। खेती की कमाई से भी भाइयों और बहनों की शादी–विवाह आदि जो भी घरेलू काम होते सभी का निबटारा होता रहा। कहने का मतलब है कि खेती से होने वाली आमदनी से जिंदगी की जो भी आधारभूत जरूरतें थीं, वह मजे से पूरी होने लगीं। बेटों ने उच्च शिक्षा ग्रहण की, लेकिन सरकारी नौकरी के पीछे दौड़ने के बजाय खेती में जुट गए।

अपनाई जैविक खेती

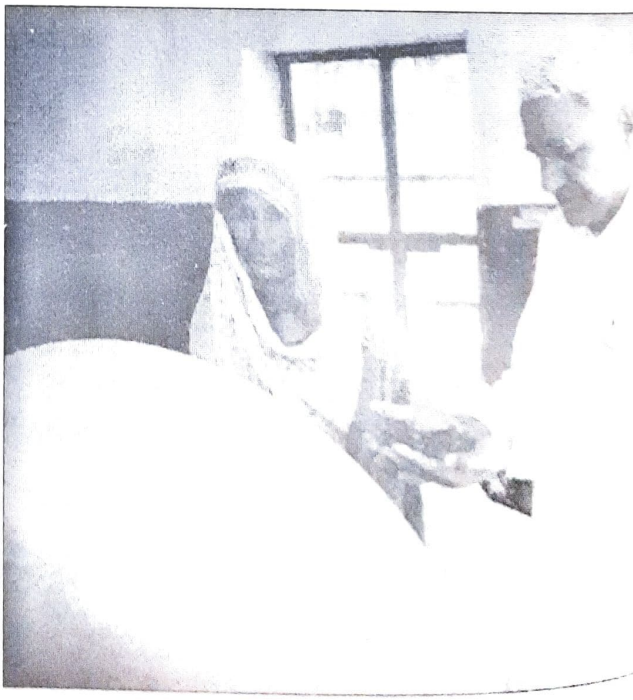

पहले खेतों में रासायनिक खाद का प्रयोग किया जाता था। विभिन्न स्थानों पर प्रशिक्षणों के दौरान बताया गया कि रासायनिक खाद के बजाय जैविक खेती का प्रयोग किया जाए तो खेत की उर्वरता भी बनी रहती है और पैदावार भी अधिक होती है। इतना ही नहीं उत्पादन की गुणवत्ता बेहतर रहती है यानी जैविक खाद से तैयार की जाने वाली उपज स्वास्थ्य के लिए भी अच्छी होती है। इसलिए मैंने 1990 में जैविक खाद का प्रयोग शुरू किया। केंचुआ खाद बनाना शुरू किया और 1999 में कीटनाशी बनाकर

खेतों में प्रयोग करने लगे। कीटनाशी बनाने में भी नीम, आक, धतूरे का इस्तेमाल करने से साइड इफेक्ट का खतरा नहीं रहा। मेरे इस प्रयोग की भी खूब वाहवाही हुई। रासायनिक के बजाय जैविक खेती करने के कारण लोगों का ध्यान उनकी तरफ आकर्षित हुआ और दूसरे लोग भी हमारी तरह ही खेती करने के लिए तैयार हो गए। तभी आंवले के जैविक विधि से पेड़ लगाए।

जैविक खेती से आय बढ़ी, पहचान बढ़ी

2001 में एस.जी.एस., गुड़गांव में जैविक खेती प्रमाणीकरण के लिए पंजीयन करवाया। 2004 में राष्ट्रीय बागवानी मिशन का प्रदेशस्तरीय सदस्य बना और अनेक महत्वपूर्ण निर्णयों में सहभागी बना। बाद में प्रमाणीकरण के लिए वनसर्ट एशिया (प्रा.) लि. से पंजीयन करवाया। वहां से प्रमाणीकरण अभी तक करवा रहा हूं। उन्हीं दिनों कृषि विपणन बोर्ड की ओर से डॉ. महेन्द्र मधुप 'कृषक संवाद' कार्यक्रम आयोजित करने के लिए आए। जयपुर दूरदर्शन की टीम जैविक खेती और आंवला मूल्य संवर्धन की रिकॉर्डिंग के लिए साथ ही थी। रिकॉर्डिंग का एक दृश्य 'चौपाल' कार्यक्रम के मोंटाज में करीब तीन वर्ष तक दिखाया गया। कृषि भवन में आंवला उत्पादों की बिक्री के लिए स्टॉल लगाया, तो उन्होंने देशभर के अखबारों और टीवी पर इतना प्रचार किया कि जहां जाता कोई न कोई पहचान जाता।

जैविक खेती वाले किसानों का समूह

2001 में जैविक खेती शुरू करने के बाद कुछ ही दिनों में काम और नाम दोनों की तारीफ होनी शुरू हो गई। फिर 50 किसानों का एक ग्रुप बनाया और देखते ही देखते सफलता की नई इबारत लिखी जाने लगी। तीन साल तक तो मुनाफा नहीं हुआ लेकिन इसके बाद जो सफलता मिली तो फिर पीछे देखने की जरूरत नहीं पड़ी। खुद ही नहीं बल्कि उसका पूरा गांव जैविक खेती करने वाले किसानों के रूप में पहचाना जाने लगा। हर किसी को पता चला कि इस इलाके में ऐसी खेती होती है जिसकी उपज स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है। इससे फसल के 10–15 प्रतिशत दाम अधिक मिलने लगे। जैविक खाद से तीसरे साल ही आय बढ़ गई। सिंचाई में लागत कम हो गई। ग्रुप बनने के बाद हमारी उपज खरीदने के लिए बड़े व्यापारी भी आने लगे।

इस तरह खुद तो फायदा कमाया ही साथ ही अपने गांव के दूसरे किसानों को भी अधिक मुनाफा कमवाया। एक तरफ अधिक मुनाफा मिल रहा था तो दूसरी तरफ जैविक खेती होने से भरपूर उत्पादन मिल रहा था। इसके अलावा मिट्टी की उर्वरता भी बची रही। इस तरह जैविक खेती से एक साथ कई फायदे मिले।

आंवले के पेड़ लगाए

जैविक खेती से मिली सफलता से उत्साह इतना बढ़ गया कि 2 हजार में एक हेक्टेयर भूमि में जैविक तरीके से चार सौ आंवले के पेड़ लगाए। चार साल बाद इसमें फल आ गए। संयोग से उन दिनों आंवले के फल की कीमत कम थी। लिहाजा ऐसा लग रहा था कि यह घाटे का सौदा हो जाएगा। बाजार में जो कीमत थी, लागत के अनुरूप घाटा दिख रहा था। पूरे परिवार में निराशा थी। हम पूरे परिवार के लोग मिल–बैठकर यही सोचते कि इस घाटे से कैसे उबरा जाए। इसी दौरान हमारी बहू, जिसने गृह विज्ञान की पढ़ाई की थी, उसने सुझाव दिया क्यों न आंवले का उत्पाद बनाकर बाजार में उतारा जाए। यह सुझाव सभी को अच्छा लगा और यहीं से शुरू हुआ एक नया सफर। अभी तक हम खेती तक सीमित थे और अब बाजार की ओर बढ़ने लगे।

यूं मिला मूल्य संवर्धन

प्रसंस्करण के लिए हम तैयार तो हो गए लेकिन जब तक पूरी तरह से प्रशिक्षण नहीं लिया गया हो उसकी सफलता पर सवाल खड़ा होता है। मैं हमेशा से ही प्रयोगधर्मी रहा हूं। इसलिए मैं सोचता रहा कि जब तक व्यावहारिक प्रसंस्करण के बारे में जानकारी नहीं होगी तब तक इसमें सफल होना पूरी तरह से संभव नहीं है। मन में आशंका थी कि कहीं इस काम में असफल हुए तो वर्षों के लिए धरे पर पानी फिर जाएगा। इसलिए मैंने तय किया कि पहले प्रसंस्करण के बारे में जाना जाए। इसे सीखने के लिए मैं उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ सहित अनेक शहरों में गया और वहां आंवले के छोटे–छोटे गृह उद्योग देखे। आंवला आधारित उद्योग चलाने के बारे में सीखा। आंवला आधारित उद्योग चलाने वालों

से बातचीत करके यह जानने की कोशिश की कि किन–किन परिस्थितियों में विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है। प्रतापगढ़ में जिस तरह से काम हो रहा था उसे देखने और काफी कुछ समझने के बाद लगा कि सपने सच हो सकते हैं। आंवले से बनते लड्डू, जूस, कैंडी, मुरब्बा, अचार, पाउडर, शरबत सहित अनेक उत्पाद देखे और उन्हें तैयार करने की विधियों पर विशेष निगाह रखी। प्रतापगढ़ से ही एक मिस्त्री लेकर गांव आया। खेत में एक कमरा बनवाया और प्रसंस्करण की शुरुआत 2003 में की। चौधरी एग्रो बायोटैक के नाम से फर्म पंजीकृत कराकर खादी ग्रामोद्योग से वित्तीय सहायता लेकर काम शुरू किया। इस काम में पूरा परिवार लगा। सभी ने जमकर मेहनत की। कुछ ही दिनों में सभी की मेहनत और लगन रंग लाई। आंवले से तैयार किए गए हमारे उत्पाद बाजार मे खूब पसंद किए गए। धीरे–धीरे इनकी मांग बढ़ने लगी। जब हमारे उत्पाद बाजार में धूम मचाने लगे तो उत्साह दो गुना हो गया। इस दौरान हमने तय किया कि गुणवत्ता में किसी तरह का समझौता नहीं किया जाएगा और यही मंत्र हमारे काम आया। हमारे उत्पादन का नाम बाजार में छा गया और जहां हम लोग घाटे को लेकर भयभीत थे वहीं मुनाफे से उत्साहित रहने लगे।

मुफ्त तकनीक

2005 में पूसा में नेशनल हॉर्टिकल्चर एक्सपो लगा। लोग पारंपरिक उत्पाद लेकर गए, जबकि मैं आंवला उत्पाद लेकर। तत्कालीन केंद्रीय कृषि

सचिव राधासिंह मेरा काम देखकर बहुत प्रभावित हुई। उन्होंने अन्य किसानों से कहा कि इनसे कुछ नया करने की सीख लो। मैंने कहा कि मुझे पूरा भरोसा नहीं कि कितना सही है। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि आईसीएआर के लुधियाना स्थित सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ पोस्ट हार्वेस्ट इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (सिफेट) से इन्हें जोड़ो। मैंने आर्थिक तंगी बताई। उन्होंने यह सुविधा निःशुल्क देने के लिए कहा। 2005 में एग्रीमेंट हुआ क्वालिटी, स्टैंडर्ड, सेल्फलाइफ और पैकेजिंग के लिए। इसने मेरी ज़िंदगी ही बदल दी। 2006 में 'सिफेट' की ओर से तैयार आंवला की ग्रेडिंग और पंचिंग मशीनें मिलीं। इसके अलावा अपने खाद्य पदार्थों के लिए जरूरी प्रसंस्करण तकनीक से जुड़ी कई जानकारियां संस्थान से मिलीं। इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर के उत्पाद बनाने में काफी मदद मिली।

2014–15 में 80 टन आंवले का उत्पादन किया। तीस टन आंवला और खरीद कर 110 टन का मूल्य संवर्धन किया। आंवला उत्पाद, गेहूं के दलिए, मिक्स और सामान्य आटे, मस्टर्ड ऑयल आदि की देशभर में करीब सवा करोड़ रुपए की बिक्री हुई। इतना लाभ हुआ, जिसकी कभी कल्पना भी नहीं की थी।

इसमें बेटे मनीष और उसकी पत्नी मीना (एम.ए.), एवं मुकेश और उसकी पत्नी सुमिता (एम.एससी.) का बड़ा योगदान रहा। 1966 में शादी हुई तब 16 साल का था। सोचा भी नहीं था दोनों बेटों को स्नातक तक पढ़ा सकूंगा। बेटियों ललिता और सजना को आठवीं तक पढ़ा शादी कर चुका हूं। यह सब हुआ कृषि व्यवसाय में नया से नया करने की ज़िद से। खेत पर अक्टूबर से अप्रेल तक 30–35 और मई से सितंबर तक 10–15 आदमी काम करते हैं।

गेहूं प्रसंस्करण भी किया

गेहूं के बारे में जानकारी मिली कि स्थानीय कमीशन एजेंट किसानों को गेहूं की जो कीमत देते हैं, जयपुर में उससे दोगुनी कीमत पर उसे बेचा जाता है। इस कारण कृषि उपजों के प्रसंस्करण के लिए इरादा और मजबूत हुआ। इस दौरान गेहूं का श्रेणीकरण करते हुए पैकेजिंग के बारे में जानकारी हासिल की। 2011 में ग्रीन हाउस लगाया। इसमें गेहूं के ज्वारे लगाते हैं। इसका पाउडर बनाकर बेचते हैं।

बनी पहचान

खेती के क्षेत्र में लगातार की गई तरक्की और अपने इलाकों के किसानों को खेती के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। ब्लॉक से लेकर जिला और राज्य से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक एक के बाद एक सम्मान मिले। 2010 में 'आत्मा' योजना का जिलास्तरीय पुरस्कार राजस्थान के मुख्यमंत्री ने जयपुर में प्रदान किया। इसी वर्ष 'सिटा' ने 'खेतों के वैज्ञानिक' सम्मान दिल्ली में प्रदान किया। 2010 में ही आईसीएआर ने दिल्ली में 'उद्यान रत्न' सम्मान प्रदान किया।

2016 में कृषि नवाचार समझने और सीखने के लिए इजराइल गया, राजस्थान सरकार के प्रतिनिधि के रूप में। इन सबके बीच सबसे बड़ा सम्मान तब मिला जब राजस्थान सरकार ने मेरा नाम प्रदेश के प्रगतिशील किसान प्रतिनिधि के रूप में पेश किया। केंद्र सरकार की ओर से मुझे 11वीं पंचवर्षीय योजना की आयोजन में प्रगतिशील किसानों के प्रतिनिधि के रूप में शामिल किया गया। इससे में काफी उत्साहित हुआ। कृषि लागत एवं मूल्य आयोग की बैठकों में राजस्थान सरकार के किसान प्रतिनिधि के रूप में भाग लेता रहा हूं। किसान प्रतिनिधि के रूप में यह बताने का मौका मिला कि किसानों को किस तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। विभिन्न योजनाओं में किसान की भागीदारी कैसे बढ़ाई जाए, इस पर भी अपनी बात रखने का मौका मिला।

बढ़ते कदम

2004 में चंडीगढ़ एग्रीटेक के हर्बल उत्पाद में प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया। यह सम्मान हमारे लिए बहुत ही गौरव की बात थी, क्योंकि यह मेहनत का सम्मान था। इस दौरान तीन दिन में हमने 80 हजार का उत्पाद बेचा। इस सफलता ने हमें उत्साहित भी किया। इसके बाद 2009 में के.एस. बायो फूड्स के नाम से हमने दूसरी फर्म का गठन किया। अपनी परियोजना के बारे में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की स्थानीय शाखा को अवगत कराया। बैंक अधिकारियों ने सहयोग किया। बैंक से ऋण लिया। इस तरह हमारी परियोजना चल पड़ी। गत वर्ष लाखों का कारोबार हुआ। हमारा कारोबार लगातार बढ़ रहा है और अब निरंतर आगे बढ़ाने का लक्ष्य है। आंवले की खेती के साथ ही अब सौ पेड़ ग्वारपाठा के भी लगवाए। इसके अलावा

बेल की कैंडी, मुरब्बा, शर्बत और ग्वारपाठे से जूस, जैल, शैंपू, साबुन सहित अन्य उत्पाद भी हमारी फर्म में बनने लगे हैं। इन सभी प्रॉसेसिंग में गांव के दर्जनों लोग लगे हुए हैं। फर्म से बनने वाले आंवला जूस, आंवला पाउडर, एलोवेरा जूस, स्क्वैश आचार, मिठाई आदि का अमेरिका, इंग्लैंड, यूएई और जापान तक में निर्यात हो रहा है। उत्पाद के.एस. बायो फूड्स ब्रांड नाम से बाजार में उपलब्ध है।

महिला सशक्तिकरण में भागीदारी

अपनी मेहनत और लगन के दम पर यह साबित कर दिया कि खेती के साथ जुड़कर एक नया मुकाम हासिल किया जा सकता है। इसके साथ ही महिला सशक्तिकरण की दिशा में भी सक्रिय सहयोग दिया। जैविक कृषि उत्पाद महिला सहकारी समिति, कीरतपुरा का गठन किया। इस समिति की महिलाएं घर-गृहस्थी का काम निबटाने के बाद उनकी फर्म में काम करती हैं। इस तरह ये महिलाएं स्वावलंबन की नई कहानी कह रही हैं। इसके अलावा जैविक खेती और खाद्य प्रसंस्करण के लिए 1500 किसानों का एक समूह बनाया। इस समूह की वजह मेरी और मेरे उत्पाद की पहचान और बढ़ गई है। तहसील कोटपूतली के ग्रामीणों ने अब बारिश के पानी से सिंचाई छोड़ दी है। अब बागों के लिए ड्रिप प्रणाली और अन्य फसलों के लिए स्प्रिंकलर का प्रयोग किया जा रहा है। इसके साथ ही हम बारिश के पानी को भी बचा रहे हैं जिससे पानी की अधिकतम उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके।

मिला सभी का सहयोग

जब खेती शुरू की तो अकेला था। कई बार परिवार के दूसरे सदस्यों को लगता था कि मैं खेती को लेकर इतना गंभीर क्यों रहता हूं। वर्षों से परिवार में खेती होती रही है, इससे ज्यादा से ज्यादा खाने भर का अनाज हो सकता है बाकी जरूरतों के लिए तो कमाई का दूसरा जरिया ढूंढ़ना ही चाहिए, लेकिन जब खेती के परिणाम सामने आने लगे तो परिवार के और लोग भी इससे जुड़ते गए। परिवार का हर सदस्य जिस लायक था, उस तरह मेहनत की। इसके बाद अगल-बगल के किसानों ने भी एकजुटता दिखाई। इस एकजुटता का लाभ भी मिला। किसान समूह गठित हुए और कई सुविधाएं भी मिलीं। जब मैंने प्रॉसेसिंग

की शुरुआत की तो सरकारी योजनाओं का भरपूर लाभ मिला। कृषि विभाग, उद्यान विभाग सहित अन्य सभी विभागों ने सहयोग किया। प्रशिक्षण दिए, खेती और प्रॉसेसिंग के तरीके बताए। बैंकों ने भी सहयोग किया।

इस तरह सभी के सहयोग से आज हमारा ब्रांड देश में ही नहीं दुनिया के दूसरे देशों में भी नाम कमा रहा है। कहते हैं कि मेहनत कभी भी बेकार नहीं जाती। जब हम किसी काम के लिए पूरे आत्मविश्वास से तैयार रहेंगे तो सरकारी अधिकारी व कर्मचारी खुद सहयोग करेंगे। हमें सबसे पहले अपने आपको तैयार करना चाहिए। जब हमारी दिशा तय रहेगी कि हम करना क्या चाहते हैं तो सभी का सहयोग मिलेगा। सरकार की ओर से किसानों से संबंधित तमाम योजनाएं चलाई जा रही हैं। संबंधित विभाग की यह जिम्मेदारी है कि उन योजनाओं का किसानों को लाभ दें। ऐसे में यदि किसान थोड़ी–सी जागरूकता बरते तो योजनाओं का लाभ उन्हें भरपूर मिलेगा। हालांकि यह संबंधित विभागों की जिम्मेदारी है कि वे उन योजनाओं का क्रियान्वयन सही रूप में करें, लेकिन यदि कोई किसान खुद योजनाओं की तलाश में लगा रहेगा तो उसे लाभ मिलना स्वाभाविक है।

ये हैं सुझाव

रॉकफास्फेट खाद विभिन्न चरणों से गुजरते हुए जब किसान तक पहुंचती है तो बिक्री भाव बहुत बढ़ जाते हैं। इसलिए सरकार को इसे सीधे किसानों को उपलब्ध करवाना चाहिए। मेरा सुझाव है कि जहां पानी कम हो वहां गेहूं की फसल नहीं लेनी चाहिए। राजस्थान में ऐसे क्षेत्रों में दहलन–तिलहन की फसल लेनी चाहिए। प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर मूल्य संवर्धन प्रसंस्करण केंद्र होने चाहिए। कक्षा आठ से कृषि विषय भी होना चाहिए। भले ही वैकल्पिक

हो। इसमें कृषि उद्यानिकी, मूल्य संवर्धन आदि पर प्रारंभिक जानकारी दी जाए। व्यावहारिक शिक्षा न होने से निठल्ले बढ़ते हैं। मैं वर्षों से कह रहा हूं कि मात्र इतिहास और साहित्य पढ़ाने से बच्चों का भला नहीं होगा। मेरी कोई नहीं सुनता।

किसानों को संदेश

मेरी तो सभी किसानों, नौजवानों से यही अपील है कि सरकार की ओर से चलाई जा रही योजनाओं के बारे में जानकारी हासिल कर सबसे पहले यह तय करें कि उन्हें करना क्या है? अपना रास्ता खुद तय करने के बाद आगे बढ़ें, सफलता अपने आप मिलती चली जाएगी। हां, इस बात का ध्यान रखने की जरूरत है कि यदि किसी भी वित्तीय संस्था से ऋण लेकर कारोबार शुरू करते हैं तो इस बात का ध्यान रखें कि वह पैसा आपको उधार मिला हुआ है। बैंक से जिस काम के लिए पैसा लें उसे उसी काम में खर्च करें। किसी भी परियोजना में सफलता तभी मिलेगी जब आय और व्यय का ब्यौरा मुकम्मल हो। हमेशा इस बात का ध्यान रखें कि आप जो काम कर रहे हैं उससे कितनी आय हो रही है और आप खर्च कितना कर रहे हैं। यदि आमदनी से अधिक खर्च किया तो परियोजना का असफल होना स्वाभाविक है।

मिले सम्मान

राजस्थान सरकार ने जैविक खेती के लिए 2016 एक लाख रुपए का पुरस्कार प्रदान किया। वर्ष के अंतिम माह में, आईसीएआर ने श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर के अंतर्गत मेरे खेत को, जैविक खेती के 5–5 प्रशिक्षणों के केंद्र के रूप में चुना और इसके लिए 5–5 लाख रुपए की मंजूरी दी गई।

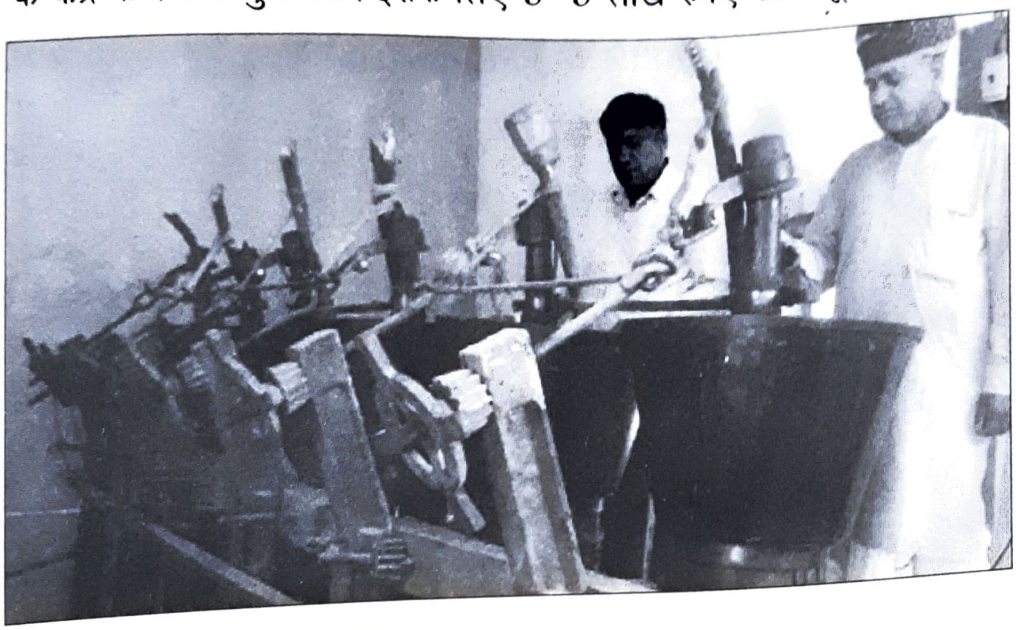

अन्तरराष्ट्रीय सम्मान

2016 में ग्रेटर नोएडा में जैविक खेती के विश्व महाकुंभ में 125 देशों ने भाग लिया। मेरा दुनिया भर के जैविक किसानों में तीसरे स्थान पर चयन कर 'धरती मित्र पुरस्कार', प्रशस्तिपत्र और दो लाख रुपए सम्मान राशि प्रदान की गई।

विश्वविद्यालयों ने किया सम्मानित

2017 में बीकानेर में राजुवास और जोधपुर मे मौलाना आजाद विश्वविद्यालय एवं 2018 में उदयपुर के पेसिफिक विश्वविद्यालय ने 'खेतों के वैज्ञानिक' के रूप में सम्मानित किया। 2019 में इंडियन सोसायटी ऑफ एग्रो बिजनेस प्रोफेशनल्स व ओसीपी फाउंडेशन, मोरक्को ने भी जयपुर में 'खेतों के वैज्ञानिक' सम्मान प्रदान किया।

सम्पर्क कर सकते हैं : गांव–कीरतपुरा, तहसील–कोटपूतली–303108, जिला–जयपुर (राजस्थान), वेबसाइट : www.ksbiofood.biz, ईमेल : ksbiofoods@gmail.com, मोबाइल : 9829083117